www.shodhpith.com ISSN (Online): 3049-3331

Shodhpith
International Multidisciplinary
Research Journal
(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)
(Multidisciplinary, Bimonthly, Multilanguage)

Volume: 1 Issue: 5 September-October 2025

तकनीक, समाज, प्रेंति और बाल–मनः क्षमा शर्मा की कहानियों का बहुआयामी अध्ययन

विकास कुमार

शोधाथएँ, हिन्दी विभाग, गुरुकुल काँगड़ी समविश्वविद्यालय, हरिद्वार

सारांश– इस शोध–लेख "तकनीक, समाज और संवेदनशील बाल–मनरू क्षमा शर्मा की कहानियों का बहु. आयामी अध्ययन" में आधुनिक तकनीकी युग के तीव्र परिवर्तन, उसके सामाजिक प्रभाव तथा बाल मनोविज्ञान पर पड़ने वाले परिणामों का सम्यक् विश्लेषण किया गया है। अध्ययन दर्शाता है कि क्षमा शर्मा की बाल कहानियाँ केवल मनोरंजनात्मक साहित्य नहीं हैं, बल्कि वे बच्चों को संवेदनशील, जागरूक और विचारशील बनाने का गंभीर प्रयास भी करती हैं। उनकी कहानियाँ उस परिवेश को प्रस्तुत करती हैं जहाँ मोबाइल, इंटरनेट और डिजिटल दुनिया बच्चों के जीवन का हिस्सा बन चुकी है, परंतु इन तकनीकी सुविधाओं के बीच भी मानवीय संबंध, पारिवारिक मूल्य, सामाजिक दायित्व और नैतिक चेतना की आवश्यकता बनी रहती है। लेख में स्पष्ट किया गया है कि क्षमा शर्मा तकनीक को नकारती नहीं, बल्कि उसके संतुलित, सकारात्मक और उत्तरदायित्वपूर्ण प्रयोग पर बल देती हैं। उनके यहाँ समाज एक सक्रिय तत्व की तरह मौजूद है, जहाँ परिवार, मित्रता, सहयोग, सहानुभूति, करुणा और सत्य जैसे मूल्य बच्चों के चरित्र–निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। उनकी कहानियों के नायक बालक केवल उपदेश ग्रहण करने वाले पात्र नहीं, बल्कि सोचने–समझने, निर्णय लेने और अनुभव से सीखने वाले जीवंत चरित्र हैं। इस दृष्टि से उनका साहित्य बाल–मन की संवेदनशीलता का सम्मान करता है और आधुनिकता तथा परंपरा के बीच सार्थक संतुलन स्थापित करता है। निष्कर्षतः यह अध्ययन सिद्ध करता है कि क्षमा शर्मा का बाल साहित्य तकनीक, समाज और बाल–चेतना के त्रिकोणीय संबंध को संवेदनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समृद्ध बनाता है। उनकी कहानियाँ बच्चों को केवल आधुनिक समय से परिचित नहीं करातीं, बल्कि उन्हें मानवीय मूल्यों से जुड़कर तकनीक का सार्थक उपयोग करने की प्रेरणा भी देती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य समकालीन बाल साहित्य में अत्यंत प्रासंगिक और उपयोगी सिद्ध होता है।

कुंजी शब्द– क्षमा शर्मा, बाल कहानियाँ, तकनीकी, समाज, बालमन

आज का युग तकनीक का युग है। मोबाइल, कंप्यूटर, इंटरनेट, स्मार्ट टीवी, टैबलेट आदि उपकरणों ने बच्चों की दुनिया में गहरी पैठ बना ली है। बच्चे अब तकनीकी वातावरण में जन्म ले रहे हैं और पल बढ़ रहे हैं। पहले जहाँ बच्चों का बचपन खेलकूद, कहानियों, मिट्टी और रंगों से जुड़ा होता था, वहीं अब वह स्क्रीन, गेम्स और वर्चुअल दुनियाओं से घिरा हुआ है। तकनीक ने बच्चों के ज्ञान और जिज्ञासा को नए आयाम दिए हैं। वे अब कुछ भी जानने के लिए इंटरनेट का सहारा लेते हैं, डिजिटल सामग्री से सीखते हैं और कई बार अपनी उम्र से अधिक विषयों पर जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। इससे उनकी बौद्धिक क्षमता को विस्तार मिलता है। विभिन्न एप्लिकेशन, शैक्षिक वीडियो और गेम्स उनकी रचनात्मकता और कल्पनाशीलता को भी नई दिशा देते हैं। वे अब कहानियों को न केवल सुनते हैं बल्कि उन्हें एनिमेट कर सकते हैं, चित्रित कर सकते हैं और डिजिटल रूप में प्रस्तुत भी कर सकते हैं।

तकनीक का प्रभाव बच्चों की भाषा और अभिव्यक्ति पर भी पड़ रहा है। संक्षिप्त शब्दों, इमोजी और अनलाइन चौटिंग की आदत ने उनके मौखिक और लेखन कौशल को सीमित कर दिया है। भाषा का सौंदर्य और गहराई कम होती जा रही है। इसके साथ ही यदि बच्चों को बिना मार्गदर्शन तकनीक से जोड़ दिया जाए तो वे भ्रामक, हिंसक या अवांछित सामग्री के संपर्क में आ सकते हैं जिससे उनके नैतिक विकास को क्षति पहुँच सकती है। इसलिए यह आवश्यक है कि तकनीक का उपयोग संयमित, मार्गदर्शित और सकारात्मक उद्देश्यों के साथ किया जाए। माता–पिता, शिक्षक और समाज को मिलकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बच्चे तकनीक का प्रयोग ज्ञान, रचनात्मकता और संवाद के लिए करें, न कि वह तकनीक के अधीन हो जाएँ। यदि संतुलन बनाया जाए तो तकनीक बाल विकास की एक सशक्त सहायक बन सकती है।

आधुनिक तकनीकि युग में बच्चों को सहज सरोकार होता है मोबाइल से। क्षमा शर्मा ने अपनी कहानी 'लालू का मोबाइल' में लालू और उसके हाथ लगे मोबाइल के माध्यम से आज की तकनीकि दुनिया को उकेरा है। बालमन पर इन तकनीकि साधनों के द्वारा पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन कहानी में मिलता है दृ "मां को गुज़रे तो ज़माना हो गया। अब ले–देकर एक यह मामा ही बचे हैं। पूसा और बिल्ला मामा तो बातचीत में लगे थे। लालू मोबाइल से अपनी जान–पहचान बढ़ा रहा था। मोबाइल की जलती बुझती लाइट्स उसे आसमान में रात के वक्त उड़ते हुए हवाई जहाज़ की याद दिला रही थी। अचानक भागदौड़ करते मोबाइल उसके पंजे से छूट गया। बिल्ला मामा ने यह देखा तो वहीं से चिल्लाए लालू इसे संभालकर रखो। बडी महंगी चीज़ है। एक बार तो गिर ही चुका है. टूट गया तो दूसरा मिलना मुश्किल है।

परिवार न केवल व्यक्ति का पहला सामाजिक संस्थान है बल्कि वह एक ऐसी पाठशाला भी है जहाँ बच्चे अपने प्रारंभिक संस्कार प्राप्त करते हैं। यहाँ उन्हें सदाचार, सम्मान, करुणा, अनुशासन, कर्तव्यबोध, सहिष्णुता और ईमानदा. री जैसे नैतिक मूल्य सिखाए जाते हैं जो जीवन की कठिन परिस्थितियों में उनके चरित्र का मार्गदर्शन करते हैं।

वर्तमान समय में हमारे वास्तविक मित्रों की संख्या घटती जा रही है और तकीनीकि दुनिया में आभासी मित्रों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस तथ्य को क्षमा शर्मा जी ने अपनी कहानी लालू का मोबाइल में बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। बड़ों के साथ–साथ बच्चों पर भी मोबाइल के माध्यम से बहुत सारे दोस्त बनाने का जिक्र इस कथानक में देखने को मिलता है– "लालू जब मोबाइल लेकर सिकंदर के पास पहुंचा तो वह हवा में उड़ती एक तितली को पकड़ने की कोशिश कर रहा था। तितली के रंग–बिरंगे पंख किसी चित्रकार की डिज़ाइन मालूम देते थे। लालू को देखकर सिकंदर ने भौंककर अपनी खुशी प्रकट की। लालू ने जब उसे मोबाइल के बारे में बताया तो वह उदास हो गया। बोला ष्मुझे तो अपने किसी रिश्तेदार का अता–पता नहीं मालूम जो उनसे बात कर सकूं। मेरे तो सब भाई–बहन बचपन में ही बिछुड़ गए थे। लेकिन कोई बात नहीं, इससे नए–नए दोस्त बनाने का तो मौका मिलेगा।

आज के डिजिटल युग में, जब बच्चा मोबाइल, इंटरनेट और कृत्रिम संसार की गिरफ्त में है, तब परिवार की भूमिका और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। पारिवारिक संवाद, बुजुर्गों के अनुभव, माता–पिता की सहभागिता और परिवार के भीतर स्नेह का वातावरण बच्चों को संतुलित दृष्टिकोण प्रदान करता है। आधुनिकता जहाँ आत्मकेंद्रित सोच को बढ़ावा देती है, वहीं परिवार उसे समूह चेतना, सामूहिक उत्तरदायित्व और संवेदनशीलता के साथ संतुलित करता है। पारिवारिक संस्कार ही यह सिखाते हैं कि व्यक्ति केवल अपने लिए नहीं, समाज के लिए भी जीता है। आज जब परिवारों में विघटन, अलगाव, तनाव और एकाकीपन जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, तब पारिवारिक मूल्यों की पुनर्स्थापना अत्यावश्यक हो जाती है। यदि परिवार में आपसी संवाद, सम्मान और नैतिकता को पुनः सुदृढ़ किया जाए तो आधुनिक युग की चुनौतियों का सामना अधिक सहजता और संतुलन के साथ किया जा सकता है। क्षमा शर्मा अपनी कहानियों के माध्यम से आधुनिकता के परिवेश में बच्चों के बदलती मनोदशा को मध्यनजर रखते हुए उनमें संस्कारों का बीजारोपण करती हैं।

कहानी 'जादुई क्रिसमस ट्री' का सैम अपने परिवार से अत्यंत नजदीकी से जुड़ाव रखता है। उसके माता–पिता आधुनिकता के दौर में भी उसके बालमन को कभी अकेला नही रहने देते। क्रिसमस के त्यौहार पर पूरा परिवार तैयारियों में लगा था। तभी सैम कहता है– "पापा, मेरी फ्रेंड जोया की मम्मी की तबीयत ठीक नहीं है। मैं उसके घर मम्मी का बनाया केक और आप जो चॉकलेट्स लाए हैं, उनमें से कुछ चॉकलेट देने जा रहा हूँ।"

बच्चे के मनोभाव को समझते हुए पिता को बहुत खुशी हुई और उन्होंने सैम को सहर्ष जाने की इजाजत दी।

वास्तव में बच्चों के मन में संस्कारों का बीजारोपण तो परिवार से ही होता है। यदि सैम के माता–पिता उसके भावनात्मक विकास पर ध्यान न देते हुए एकाकी जीवन शैली को अपना लेते तो उसके मनोभावों में इस प्रकार मिलजुल कर त्यौहार मनाने और दूसरों की पीड़ा समझने का विचार कभी न आता। वस्तुतः सैम को यह गुण उसके माता–पिता से ही मिला था। उनके घर में भी अभी त्यौहार की तैयारियां शेष थीं। पिता सैम के जाने के बाद तैयारियां करने लगे तो उनकी पत्नी एलिना ने कहा कि यह सब सैम आकर कर लेगा। तब जोजफ ने हंसते हुए कहा– "वह त्योहार ही क्या जिसमें सब मिल–जुलकर काम न करें। वह आकर करे इससे बेहतर मैं ही इसे क्यों न निपटा दूं।" आधुनिक डिजिटल युग में बच्चों के मन में सहयोग की भावना उत्पन्न करने का प्रथम पाठ घर के माहौल से ही आरम्भ होता है। जो कि इस कहानी में क्षमा शर्मा जी द्वारा पूर्ण रूप से उद्घाटित करने का कार्य किया गया है।

समाज एक गतिशील संस्था है जो समय के साथ अपने स्वरूप, मूल्यों, संबंधों और संरचना में परिवर्तन करता रहता है। इन परिवर्तनों का सबसे अधिक प्रभाव उस वर्ग पर पड़ता है जो सबसे कोमल, संवेदनशील और निर्माण की अवस्था में होता है अर्थात् बाल वर्ग पर। वर्तमान युग में समाज की पारंपरिक संरचना, विशेषतः संयुक्त परिवार की व्यवस्था, तेजी से बदल रही है। अब एकल परिवारों का प्रचलन बढ़ गया है जिसमें माता–पिता दोनों ही कार्य. रत होते हैं और बच्चों के पास समय बिताने के लिए दादी–नानी जैसे आत्मीय जन नहीं होते। इससे बालकों के भावनात्मक और सामाजिक विकास पर गहरा असर पड़ता है। पहले जहाँ बच्चे अपने माता–पिता, बड़े–बुजुर्गों की कहानियाँ, जीवन अनुभव और नैतिक शिक्षाएँ सुनते थे, वहीं अब उनकी दुनिया सीमित होती जा रही है। पारिवारिक संवाद कम हो गया है और संप्रेषण के साधनों में कृत्रिमता बढ़ गई है। 'इंजन चले साथ–साथ' कहानी में लेखिका ने बच्चों और माता–पिता के बीच होने वाले संवाद की महत्ता को रेखांकित किया है। सोमेश जब स्टेशन के किनारे खड़े इंजन को देखकर आता है तो अपनी माँ से कहता है–

"माँ आपको पता है रेलवे स्टेशन के किनारे एक पुराना इंजन खड़ा है?"

"हाँ देखा तो है। बाबूजी बड़ी मजेदार कहानी सुनाते हैं इसके बारे में।"

"सुनाओ न माँ!"

"अब इस वक्त पूरे दिन की थकी हूँ। फिर तुम लोग ऊँघ भी तो रहे हो!" माँ ने दोनों बच्चों को हलके से झिड़का।

"सुना भी दो न माँ!" सोमेश ने प्रार्थना की।

सोमेश की प्रार्थना पर माँ ने बच्चों को इंजन की पूरी कहानी सुनाई। बिना ड्राइवर के दौड़ते इंजन की कहानी सुनकर बच्चों के मन में डर पैदा हुआ।

आज वर्तमान समय में तकनीक ने परिवार को एक–दूसरे के पास होते हुए भी दूर कर दिया है। बच्चे अकेलापन का शिकार हो रहे हैं और उनका मन टीवी, मोबाइल या टैबलेट की स्क्रीन में उलझा रहता है। इससे उनके व्यवहार में चिड़चिड़ापन, आत्मकेंद्रिता और भावनात्मक संकोच जैसे लक्षण उभरने लगे हैं। सार्वजनिक कार्यक्रमों, उत्सवों आदि में वे अपनी भूमिका का निर्धारण करने में असमर्थ प्रतीत हो रहे हैं। 'इंजन चले साथ–सा. थ' के बाल नायक सोमेश का अपनी माता और समाज के बुजुर्ग व्यक्तियों से निरंतर संवाद होता रहता है जिसके कारण उसके अन्दर सामाजिकता का गुण प्रगाढ़ होता चला जा रहा है। स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रम के अवसर पर उसे अपनी मां की कमी कार्यक्रम में महसूस होती है। वह बिना किसी संकोच के अपनी मां को उस कार्यक्रम में ले आता है। स्टेशन मास्टर चाचा ने आगे बढ़कर माँ का स्वागत किया और कहा – "आइए भाभीजी, बच्चों ने आपको लाकर बहुत अच्छा किया। हम पिता लोग तो घरों से बाहर रहते हैं। आप माताओं की ही प्रेरणा है कि जिस बात की हम कल्पना भी नहीं कर सकते थे, बच्चो ने वह कर दिखाया।"

स्टेशन मास्टर का उक्त कथन कहानी में प्रयुक्त हुआ वक्तव्य मात्र नहीं है। यह वर्तमान समाज की वह रिक्तता है जिस पर हमारा ध्यान नहीं जा रहा है। माता–पिता और बुजुर्ग बच्चों की पहली पाठशाला होते हैं।

इसके साथ ही सामाजिक संबंधों का ताना–बाना भी अब पहले जैसा जीवंत नहीं रहा। पड़ोसी, मित्र, रिश्तेदार आदि के साथ मिलने–जुलने का समय घटा है। बालक अब आभासी मित्रों के साथ अधिक जुड़े हुए हैं, जिनसे भावनात्मक संबंध नहीं बनते। इससे उनमें सहानुभूति, सहयोग, धैर्य और सामाजिक व्यवहार के गुण विकसित नहीं हो पाते। बदलते समाज में बच्चों को जीवन के यथार्थ से जल्दी परिचय हो रहा है। वे टेलीविजन, समाचार,

सोशल मीडिया और अन्य माध्यमों से सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक बदलावों से रूबरू हो रहे हैं। कभी–कभी यह जानकारी उनके मानसिक स्तर से बड़ी होती है जिससे वे या तो भयभीत होते हैं या फिर असंवेदनशील। इन सबके बीच यह आवश्यक हो जाता है कि समाज अपनी बदलती संरचना के साथ बच्चों के मानसिक और भावनात्मक पोषण की व्यवस्था भी सुनिश्चित करे।

क्षमा शर्मा जी के कथा–साहित्य में ना केवल मानव–मानव अपितु मानव और प्रकृति के विभिन्न अंगों के बीच भी अटूट संबंध देखने को मिलता है। बाल मन और प्रकृति का संबंध अत्यंत आत्मीय, सहज और स्वाभाविक होता है। बालक जन्म से ही प्रकृति के विविध तत्वों से घिरा रहता है और उन्हीं से वह जीवन के अनेक गुण, व्यवहार और भावनाएँ सीखता है। प्रकृति की गोद बालक के लिए केवल खेलने और आनंद लेने की जगह नहीं बल्कि एक जीवंत पाठशाला होती है जहाँ से वह जीवन के मूल संस्कार ग्रहण करता है। प्रकृति के विविध अंग जैसे नीला आसमान, उड़ते बादल, बहती नदियाँ, झरझर गिरते झरने, लहलहाते खेत, हरे–भरे पेड़–पौधे, चहचहाते पक्षी, दौड़ते–फिरते पशु और मिट्टी की सोंधी गंध इन सबके प्रति बालक का सहज आकर्षण होता है। वह इन्हें केवल देखता नहीं बल्कि उनसे संवाद भी करता है। बालक के लिए एक फूल सिर्फ एक फूल नहीं होता, वह उसके साथ बातें करता है, उसे छूता है उसकी महक में खो जाता है। मिट्टी उसके लिए खेलने का माध्यम तो होती ही है साथ ही वह उसमें जीवन की सृजनात्मक शक्ति को भी महसूस करता है, वहीं वह घर बनाता है, किले बनाता है, अपनी कल्पनाओं की दुनिया रचता है। कहानी 'हरा सूरज' इसी प्रकार बालमन के कल्पना लोक से उपजी है। मिस सिंह अजरज में पड़ गईं जब उन्होंने देखा कि एक बच्चे ने अपनी कॉपी पर हरे रंग का सूरज बनाया है। जब मिस सिंह ने सभी से पूछा कि किसी ने हरा सूरज देखा है क्या? तो सिर्फ एक बच्चे ने कहा –हाँ मिस! मिस सिंह देखकर हैरान थीं, यह वही बच्चा था जिसने हरा सूरज बनाया था। उन्हें थोड़ा गुस्सा आया। कहा – "बताओ कब देखा था तुमने हरा सूरज।"

"मैम तब हमने हरे लैंस का चश्मा लगाया था।'' उसकी बात सुनकर सब बच्चे हंसने लगे तो वह बोला–

"लैकिन मैम मेरी मम्मी कहती है कि जो चीज हम जैसी देखना चाहते हैं वैसी बनानी चाहिए।"

बाल मन की जिज्ञासा और कल्पनाशक्ति का प्रभाव जीवन पर किस प्रकार पड़ता है उसकी बानगी हमें बच्चे के अगले वक्तव्य में देखने को मिलती है। मैम ने पूछा –

"तो तुमने सूरज को हरा क्यों बनाया?"

"इसलिए मैम की अगर सूरज हरा हो गया तो इतना बड़ा पेड़ हो जाएगा कि चारों तरफ छाया ही छाया हो जाएगी।"

बच्चा यहाँ किसी तर्क या वैज्ञानिक सोच से नहीं बल्कि अपनी स्वाभाविक, कल्पनाशील दृष्टि से दुनिया को देख रहा है। उसके मन में सूरज का अर्थ केवल एक जलता हुआ तारा नहीं बल्कि जीवन और हरियाली का स्रोत है। जब वह सूरज को "हरा" बना देता है तो यह रंग परिवर्तन उसकी कल्पना में उष्णता से शीतलता, कठोरता से कोमलता और प्रकृति के संरक्षण की भावना का प्रतीक बन जाता है। उसके उत्तर में यह भाव स्पष्ट झलकता है कि यदि सूरज हरा हो जाए तो वह पेड़ बनकर सबको छाया देगा यानी प्रकृति सबको आश्रय देने वाली, पालन करने वाली शक्ति है। यह विचार बच्चे की संवेदनशील चेतना और प्रकृति–मित्र दृष्टि को प्रकट करता है।

पशु–पक्षियों के प्रति भी बालकों का भावनात्मक जुड़ाव गहरा होता है। चिड़ियों का उड़ना, उनका घोंसला बनाना, चूजों को दाना खिलाना आदि को देखकर बालक प्रसन्न होता है, उनसे अपनापन महसूस करता है। किसी घायल पक्षी को देखकर वह दुःखी होता है, किसी पिल्ले को भूखा देखकर उसे रोटी देना चाहता है। यह स्वाभा. विक करुणा और सहानुभूति ही वे मूल बीज हैं जो एक बालक को आगे चलकर संवेदनशील नागरिक बनाते हैं। इन्हीं गुणों से सम्पन्न है 'पुकारे मिनी...मिनी' की बाल नायिका 'मिनी'। मिनी बालकनी में जाकर बाहर देखने लगी। "पार्क में एक गुरसल घास से बीनकर कुछ खा रही थी कि एक गिलहरी उसके पीछे दौड़ी। गुरसल डर से दूर भाग गई तो गिलहरी वहां खाने लगी। पता नहीं वे क्या खा रही थीं। गुरसल ने फिर उधर कदम बढ़ाया तो इस बार दो गिलहरियों ने उसका पीछा किया। मिनी को इस खेल में बहुत मजा आया। लगा जैसे कि गिलहरी और गुरसल छुआछुई का खेल खेल रही हों। कि तभी टामी कैट जैसा एक बिल्ला एक गौरैय्या की तरफ दबे पांव बढ़ा।

मिनी जोर से चिल्लाई– भागो, भागो। और तालियां बजाने लगीं। ताली की आवाज से चिड़ियां उड़ गई। गिलहरियां भाग गई और बिल्ला देखता रह गया। उसके शिकार जो हाथ से निकल गए थे।" यह दृश्य दिखाता

है कि मिनी का मन प्रकृति के सभी जीवों के प्रति दया और करुणा से भरा हुआ है। उसके लिए यह केवल खेल नहीं बल्कि एक जीवनमूल्य है– किसी को कष्ट न देना और दूसरों के जीवन की रक्षा करना।

बांसुरी बजाने वाला खरगोश कहानी में क्षमा शर्मा जी ने बच्चों के मन में प्रकृति के प्रति बड़े ही रोचक कथ. ानक के माध्यम से जिज्ञासा उत्पन्न करने का प्रयास किया है दृ "एक था मुटकू। यह नाम उसकी मां ने बड़े प्यार से रखा था। मुटकू था तो खरगोश लेकिन सबसे ज़्यादा दोस्ती उसकी जंगल की चिड़ियों से थी। वह उनकी ही तरह गाना गाने की कोशिश करता। कई बार तो उनकी तरह उड़ने के चक्कर में चोट लगवा बैठा था। वह अक्सर अपनी मां से पूछता कि आखिर वह चिड़ियों की तरह क्यों नहीं है? वह भी उनकी तरह उड़ना चाहता है। मां समझाती कि इस दुनिया में सबकी अपनी जगह है। चिड़िया उड़ सकती हैं तो वह दौड़ सकता है। मगर मुटकू की समझ में बात न आती।" कहानी में एक छोटे खरगोश मुटकू और उसके प्राकृतिक परिवेश विशेषकर चिड़ियों के साथ उसके आत्मीय संबंध का वर्णन किया गया है। यह कथानक न केवल बालकों को आनंद प्रदान करता है बल्कि उनके मन में प्रकृति के प्रति आकर्षण, जिज्ञासा और अपनत्व की भावना भी जगाता है। इस प्रकार की कहानी से बच्चे यह सीखते हैं कि पशु–पक्षी केवल देखने या चित्रों में रंगने की चीज़ नहीं हैं बल्कि उनके भी भाव, इच्छाएँ और सपने होते हैं। इससे बच्चों के मन में पशु–पक्षियों के प्रति आत्मीयता और करुणा का भाव उत्पन्न होता है।

प्रकृति मात्र मनमोहक ही नहीं है। प्रकृति में खतरा भी उपस्थित है। जिसे बच्चों को समय के साथ–साथ परिवार द्वारा सिखाया जाता है। क्षमा शर्मा जी ने बिल्ली और चिड़ियों के कथानक के माध्यम से इस सबक को सिखाने का प्रयास किया है दृ "बिल्ली को देखते ही सारी चिड़ियों ने इतना शोर मचाया कि आसपास के पेड़ों पर बैठी सभी चिड़ियों को पता चल गया कि ज़रूर कोई ख़तरा है। गलती से भी अगर कोई चिड़िया बिल्ली के चंगुल में फंसती तो उसे भी पता चल जाता कि बिल्ली कहीं आसपास ही है। सत्यानाश हो इन शोर मचाने वाली चिड़ियों का। बड़े दिन बाद स्वादिष्ट भोजन मिलने की उम्मीद बंधी थी मगर वह भी न हो सका।"

बालकों को बादलों में आकृतियाँ नजर आती हैं कोई हाथी, कोई घर, कोई परीकथा की राजकुमारी। यही उनकी कल्पनाशक्ति का आरंभिक रूप होता है जो बाद में लेखन, चित्रकला या अन्य रचनात्मक विधाओं का आधार बनता है। हवा के झोंके, वर्षा की बूँदें, ओस की बूँदें एवं इन्द्रधनुष का सौंदर्य बालक को मंत्रमुग्ध कर देता है। वह भीगने, मिट्टी में लोटने और पेड़ पर चढ़ने में संकोच नहीं करता क्योंकि उसमें प्रकृति के साथ कोई दूरी नहीं होती वह उसे अपने जैसा ही मानता है। पेड़–पौधों के साथ बालक का संबंध केवल उपयोग तक सीमित नहीं होता। वह पेड़ को झूले की तरह इस्तेमाल करता है, फल तोड़ता है, छाया में बैठता है, पत्तों को जोड़कर नावें बनाता है। उसे वृक्ष में जीवन का एहसास होता है। अनेक बच्चों को अपने आँगन का पेड़ परिवार के सदस्य जैसा लगता है। पेड़ और बच्चों के मनोभावों को उद्घाटित करने वाली बड़ी सुन्दर कहानी है– 'गड़बड़–सड़बड़'। कहानी का मुख्य बाल पात्र है – अंशु। अंशु बहुत चंचल और जिज्ञासु बच्चा है। अंशु के घर के किचन के सामने ही एक चम्पा का पेड़ लगा है। एक रोज अंशु ने देखा कि चम्पा के पेड़ के पत्ते गिर गये।

"अंशु चम्पा के पेड़ को देखते हुए तमाम पुरानी बातें सोच रहा था, मगर उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर पेड़ को हुआ क्या है।

उसने मम्मी से पूछा क्या हुआ इसे। तभी उसे जोर से बोलते दो कउओं की आवाज सुनाई दी।

अरे, पूछ रहे हो क्या हो गया। दिखाई नहीं दे रहा। ऊपर पत्तों की एक छतरी सी तनी है, बाकी पत्ते कहां गये। कल तक तो थे।

कहां गये होंगे पत्ते। कौन तोड़ ले गया होगा।– अंशु ने फिर पूछा।''

इस कथानक में अंशु नामक एक छोटे बच्चे के मन में प्रकृति और पेड़ के प्रति गहरी संवेदना प्रकट होती है। जब वह चम्पा के पेड़ को देखता है तो उसे लगता है कि पेड़ में कुछ गड़बड़ हैकृउसके पत्ते गायब हैं उसकी हरियाली खो गई है। यह दृश्य देखकर अंशु के मन में चिंता और जिज्ञासा दोनों उत्पन्न होती हैं। वह मम्मी से पूछता है कि "पेड़ को क्या हुआ?"– यह प्रश्न उसकी निर्दोष जिज्ञासु प्रवृत्ति और पेड़ के प्रति भावनात्मक लगाव को दर्शाता है। कौओं की आवाज़ और उनकी बातों से उसे एहसास होता है कि पेड़ की छतरी तो बची है लेकिन उसके पत्ते गायब हैं। अंशु को यह जानने की बेचौनी होती है कि आखिर पेड़ के पत्ते कहाँ चले गए, किसने तोड़ दिए। यह बेचौनी एक बच्चे के भीतर छिपी जीवंत संवेदना का प्रतीक है। अंशु के हृदय में चम्पा के पेड़ के प्रति बहुत प्रेम था। वह तुरन्त पेड़ के पास पहुंचा और उससे संवाद करने लगा। कथानक के अनुसार–

"अंशु नीचे चम्पा के पेड़ के पास पहुंचा। उसे वहां कोई दिखाई नहीं दिया। उसने पेड़ के तने को प्यार से सहलाया। बोला–तुम्हें बहुत दर्द हुआ था जब तुम्हारे पत्ते तोड़े गए थे। मगर तुमने मुझे क्यों नहीं बताया। हमारी किचन की खिड़की के सामने ही तो तुम लगे हो। मुझे बुलाते तो फौरन दौड़ा आता। फिर देखता कि कैसे कोई तुम्हें तंग करता है।"

इस अंश में अंशु की प्रकृति के प्रति संवेदनशील और करुणामय भावना अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त हुई है। वह चम्पा के पेड़ से केवल एक वस्तु या सजावटी पौधे की तरह नहीं बल्कि एक जीवित, संवेदनशील साथी की तरह जुड़ा हुआ है। वह पेड़ से संवाद करने और उसके दुख को समझने का प्रयास करता है। अंशु को यह महसूस होता है कि पेड़ ने अपने पत्ते खो दिए हैं और शायद उसे दर्द हुआ होगा। यह सोचकर वह पेड़ के प्रति मानवीय संवेदना प्रकट करता है जैसे वह किसी मित्र से बात कर रहा हो जिसने कुछ कष्ट सहा हो। अंशु का यह भाव यह दर्शाता है कि बच्चे के भीतर प्रकृति के साथ संवाद करने की सहज क्षमता होती है। उसके लिए पेड़ भी एक "जीव" है जो बोल सकता है, दुखी हो सकता है और जिसे बचाया जा सकता है। यह संवेदना मनुष्य और प्रकृति के सहजीवी संबंध की ओर संकेत करती है जहाँ दोनों एक–दूसरे के दुःख–सुख को महसूस कर सकते हैं।

मिट्टी और बालक का तो अनोखा रिश्ता होता है। वह मिट्टी में खेलता है, मिट्टी के खिलौने बनाता है, कभी उसका स्वाद भी चख लेता है। यह सब केवल शारीरिक गतिविधियाँ नहीं हैं बल्कि बालक प्रकृति के हर अंश को संज्ञा और आत्मा से युक्त अनुभव करता है। प्रकृति के विविध अंगकृपशु–पक्षी, पेड़–पौधे, आसमान, बादल, मिट्टी आदिकृसभी बालक के जीवन और विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके संपर्क में रहकर बालक न केवल संवेदनशील और सौंदर्यबोध संपन्न बनता है बल्कि उसमें सहानुभूति, करुणा, कल्पनाशक्ति और आत्मीयता के गुण भी विकसित होते हैं। यदि बालक को प्रकृति की गोद में खुलकर खेलने, महसूस करने और जीने का अवसर मिले तो वह न केवल एक रचनात्मक व्यक्ति बनेगा बल्कि धरती और जीवन के प्रति जिम्मेदार नागरिक भी बन सकेगा। यही प्रकृति और बाल मन के संबंध की सबसे सुंदर परिणति है।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. शर्मा, क्षमा, लालू का मोबाइल, लालू का मोबाइल, पृ. 2
2. शर्मा, क्षमा, लालू का मोबाइल, लालू का मोबाइल, पृ. 8
3. शर्मा, क्षमा, जादुई क्रिसमस ट्री, जादुई क्रिसमस ट्री, पृ. 52
4. शर्मा, क्षमा, जादुई क्रिसमस ट्री, जादुई क्रिसमस ट्री, पृ. 52
5. क्षमा शर्मा की चुनिन्दा बाल कहानियां, इंजन चले साथ–साथ, पृ. 39
6. क्षमा शर्मा की चुनिन्दा बाल कहानियां, इंजन चले साथ–साथ, पृ. 44
7. क्षमा शर्मा की चुनिन्दा बाल कहानियां, हरा सूरज, पृ. 49
8. क्षमा शर्मा की चुनिन्दा बाल कहानियां, हरा सूरज, पृ. 49
9. शर्मा, क्षमा, जादुई क्रिसमस ट्री, पुकारे मिनी .. मिनी, पृ. 78
10. शर्मा, क्षमा, लालू का मोबाइल, बांसुरी बजाने वाला खरगोश, पृ. 12
11. शर्मा, क्षमा, लालू का मोबाइल, मोनू के सपने, पृ. 33
12. शर्मा, क्षमा, जादुई क्रिसमस ट्री, गड़बड़–सड़बड़, पृ. 36

13. शर्मा, क्षमा, जादुई क्रिसमस ट्री, गड़बड़—सड़बड़, पृ. 38

Cite this Article-

'विकास कुमार', 'तकनीक, समाज, प्रकृति और बाल-मन: क्षमा शर्मा की कहानियों का बहुआयामी अध्ययन', Shodhpith International Multidisciplinary Research Journal, ISSN: 3049-3331 (Online), Volume:1, Issue:05, September-October 2025.

Journal URL- https://www.shodhpith.com/index.html

Published Date- 04 September 2025

DOI-10.64127/Shodhpith.2025v1i50013